टिप्पणी

19

शतरंज के खिलाड़ी

आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अकेले रहना, समूह में रहना और समाज बनाकर रहना- हमारी दुनिया में ये ही तीन स्थितियाँ हैं। इन स्थितियों में से तीसरी यानी समाज बनाकर रहने की स्थिति सिर्फ़ मनुष्य की है, इसीलिए उसे सभी प्राणियों में श्रेष्ठतम प्राणी होने का गौरव प्राप्त है। मनुष्य को देश और समाज से अनेक रूपों में बहुत कुछ मिलता है, इसलिए उसका भी यह कर्त्तव्य है कि वह तन, मन और धन सभी तरीकों से इस ऋण से मुक्त होने का प्रयास करे। लेकिन बहुत से मनुष्य अपने इस कर्तव्य का पालन करने में रुचि नहीं दिखाते और अपना पेट भरने, अपने शौक पूरे करने और अपनी सुख-सुविधाओं का आनंद लेने में लगे रहते हैं। जब किसी देश की शासन-व्यवस्था से जुड़े लोग ऐसा करते हैं तो यह बीमारी जनता तक भी पहुँच जाती है और देश बरबाद या पराधीन हो जाता है। ऐसे ही विषय पर हमें सोचने को मजबूर करती है यह कहानी- 'शतरंज के खिलाड़ी'।

उद्देश्य

इस कहानी को पढ़ने के बाद आप–

- शासक वर्ग की विलासिता से होने वाले परिणामों का विवेचन कर सकेंगे;
- देश और समाज के प्रति कर्त्तव्य-पालन की आवश्यकता पर विचार व्यक्त कर सकेंगे;
- पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- कहानी के परिवेश को स्पष्ट कर सकेंगे;
- हिंदी भाषा के हिंदुस्तानी स्वरूप की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- हिंदी के मुहावरों का अपने लेखन में प्रयोग कर सकेंगे;
- कहानी के मूल संदेश का उल्लेख कर सकेंगे।

19.1 मूल पाठ

आइए, एक बार इस कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

शतरंज के खिलाड़ी

वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफ़ीम की पिनक ही में मज़े लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में, साहित्य-क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी। राजकर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को ख़बर न थी। बटेर लड़ रहे हैं। तीतरों की लड़ाई के लिए पाली बदी जा रही है। कहीं चौसर बिछी हुई है; पौ-बारह का शोर मचा हुआ है। कही शतरंज का घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे। यहाँ तक कि फ़कीरों को पैसे मिलते, तो वे रोटियाँ न लेकर अफ़ीम खाते या मदक पीते। शतरंज, ताश, गंजीफ़ा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार-शक्ति का विकास होता है, पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है– ये दलीलें/ज़ोरों के साथ पेश की जाती थीं (इस सम्प्रदाय के लोगों से दुनिया अब भी खाली नहीं है)। इसलिए, अगर मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशनअली अपना अधिकांश समय बुद्धि तीव्र करने में व्यतीत करते थे, तो किसी विचारशील पुरुष को क्या आपत्ति हो सकती थी? दोनों के पास मौरूसी जागीरें थी; जीविका की कोई चिंता न थी; घर में बैठे चखौतियाँ करते थे। आख़िर और करते ही क्या? प्रात:काल दोनों मित्र नाश्ता करके बिसात बिछा कर बैठ जाते, मुहरे सज जाते और लड़ाई के दाव-पेंच होने लगते। फिर ख़बर न होती थी कि कब दोपहर हुई, कब तीसरा पहर, कब शाम! घर के भीतर से बार-बार बुलावा आता कि खाना तैयार है। यहाँ से जवाब मिलता–चलो, आते हैं, दस्तरख़्वान बिछाओ। यहाँ तक कि बावरची विवश होकर कमरे ही में खाना रख जाता था, और दोनों मित्र दोनों काम साथ-साथ करते थे। मिरज़ा सज्जाद अली के घर में कोई बड़ा-बूढ़ा न था, इसलिए उन्हीं के दीवानखाने में बाज़ियां होती थीं। मगर यह बात न थी कि मिरज़ा के घर के और लोग उनके इस व्यवहार से ख़ुश हों। घरवालों का तो कहना ही क्या, मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक नित्य द्वेषपूर्ण टिप्पणियाँ किया करते थे–बड़ा मनहूस खेल है। घर को तबाह कर देता है। ख़ुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े, आदमी दीन-दुनिया किसी के काम का नहीं रहता– न घर का, न घाट का। बुरा रोग है। यहाँ तक कि मिरज़ा की बेगम को इससे इतना द्वेष था कि अवसर खोज-खोज कर पति को लताड़ती थीं। पर उनको इसका अवसर मुश्किल से मिलता था। वह सोती रहती थीं, तब तक बाजी बिछ जाती थी और रात को जब सो

शब्दार्थ

विलासिता–शानो-शौकत

आमोद-प्रमोद–मौज-मस्ती

पिनक–नशा

मजलिस–सभा, महफ़िल

कलाबत्तू–रेशम के साथ बटा हुआ सोने-चाँदी का तार

चिकन–लखनऊ का प्रसिद्ध कढ़ाई वाला कपड़ा

मिस्सी–मसूढ़ों को रँगने के लिए काम आने वाला पदार्थ

उबटन–हल्दी, सरसों आदि से बना हुआ अंग-लेप

चौसर–चौपड़, चौकोर खानों वाला, किंतु पासों द्वारा खेला जाने वाला खेल

गंजीफ़ा–एक प्रकार का खेल, जो आठ रंग की 96 पत्तियों से खोला जाता है।

पेचीदा–जटिल

मौरूसी–पैतृक

चखौतियाँ–मनोरंजन, हँसी-मज़ाक

बिसात–वह जिस पर शतरंज खेलते हैं

दस्तरख़्वान–खाने के लिए बिछाया जाने वाला कपड़ा

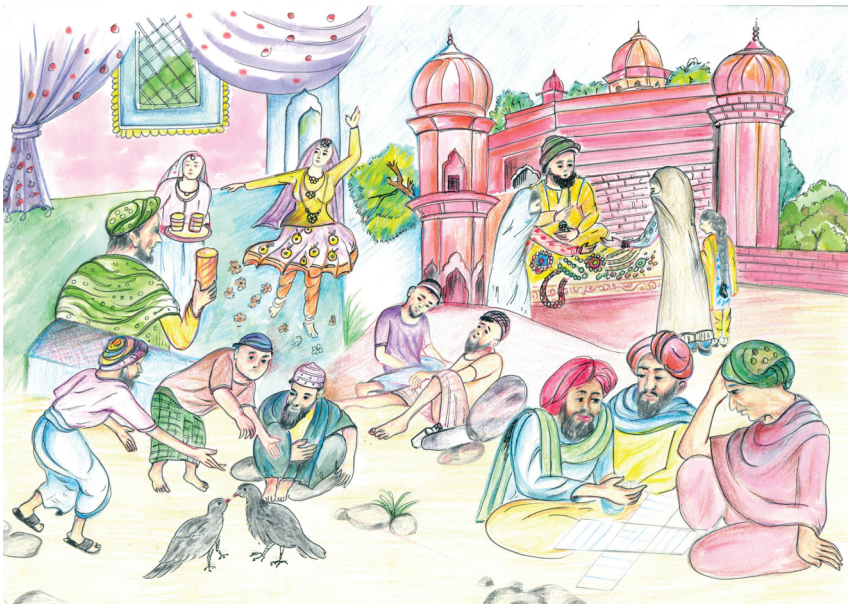

चित्र 19.1

जाती थीं, तब कही मिरज़ा जी घर में आते थे। हाँ, नौकरों पर वह अपना गुस्सा उतारती रहती थीं—क्या पान माँगे हैं? कह दो, आ कर ले जाएँ। खाने की फ़ुरसत नहीं है? ले जा कर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहे कुत्ते को खिलाएँ। पर, रूबरू वे भी कुछ न कह सकती थीं। उनको अपने पति से उतना मलाल न था, जितना मीर साहब से। उन्होंने उनका, नाम मीर बिगाड़ू रख छोड़ा था। शायद मिरज़ा जी अपनी सफ़ाई देने के लिए सारा इलज़ाम मीर साहब ही के सर थोप देते थे।

एक दिन बेगम साहबा के सिर में दर्द होने लगा। उन्होंने लौंडी से कहा— जाकर मिरज़ा साहब को बुला ला। किसी हकीम के यहाँ से दवा लाएँ। दौड़, जल्दी कर। लौंडी गई, तो मिरजा जी ने कहा—चल, अभी आते हैं। बेगम साहब का मिज़ाज गरम था। इतनी ताब कहाँ कि उनके सिर में दर्द हो और पति शतरंज खेलता रहे। चेहरा सुर्ख़ हो गया। लौंडी से कहा—जाकर कह, अभी चलिए, नहीं तो वो आप ही हकीम के यहाँ चली जाएँगी। मिरज़ा जी बड़ी दिलचस्प बाजी खेल रहे थे, दो ही किस्तों में मीर साहब की मात हुई जाती थी। झुँझलाकर बोले—क्या ऐसा दम लबों पर है? ज़रा सब्र नहीं होता?

मीर—अरे, तो जाकर सुन ही आइए न। औरतें नाजुक-मिज़ाज होती ही हैं।

मिरज़ा—जी हाँ, चला क्यों न जाऊँ! दो किस्तों में आपकी मात होती है।

मीर—जनाब, इस भरोसे न रहिएगा। वह चाल सोची है कि आपके मुहरे धरे रहें और मात हो जाय। पर जाइए, सुन आइए। क्यों खामख़्वाह उनका दिल दुखाइएगा?

मिरज़ा—इसी बात पर मात ही करके जाऊँगा।

मीर—मैं खेलूँगा ही नहीं। आप जा कर सुन आइए।

रूबरू-आमने-सामने

ताब-धैर्य

इलज़ाम-आरोप

मलाल-दुख, अफ़सोस

महीन बुनना-कसीदाकारी

लौंडी-दासी

सुर्ख़-लाल

किस्त-चाल, शतरंज के खेल में राजा को घेरने के लिए किसी मोहरे द्वारा दी गई चुनौती

लब-होंठ

सब्र-धैर्य

नाजुक-मिज़ाज-कोमल स्वभाव वाली

ख़ामख़्वाह-व्यर्थ में, बेकार में

टिप्पणी

मिरज़ा–अरे यार, जाना पड़ेगा हकीम के यहाँ। सिर-दर्द ख़ाक नहीं है, मुझे परेशान करने का बहाना है।

मीर–कुछ भी हो, उनकी ख़ातिर तो करनी ही पड़ेगी।

मिरज़ा–अच्छा, एक चाल और चल लूँ।

मीर–हरगिज़ नहीं, जब तक आप सुन न आएँगे, मैं मुहरे में हाथ ही न लगाऊँगा। मिरज़ा साहब मजबूर होकर अंदर गए तो बेगम साहबा ने त्योरियाँ बदलकर, लेकिन कराहते हुए कहा–तुम्हें निगोड़ी शतरंज इतनी प्यारी है। चाहे कोई मर ही जाय, पर उठने का नाम नहीं लेते। नौज, कोई तुम जैसा आदमी हो।

मिरज़ा–क्या कहूँ, मीर साहब मानते ही न थे। बड़ी मुश्किल से पीछा छुड़ाकर आया हूँ।

बेगम–क्या जैसे वह खुद निखट्टू हैं, वैसे ही सबको समझते हैं। उनके भी तो बाल-बच्चे हैं; या सबका सफ़ाया कर डाला?

मिरजा–बड़ा लती आदमी है। जब आ जाता है, तब मजबूर होकर मुझे भी खेलना पड़ता है।

चित्र 19.2

बेगम–दुत्कार क्यों नहीं देते?

मिरज़ा–बराबर के आदमी हैं; उम्र में, दर्जे में मुझसे दो अंगुल ऊँचे। मुलाहिज़ा करना ही पड़ता है।

बेगम– तो मैं ही दुत्कारे देती हूँ। नाराज़ हो जाएँ, हो जाएँ। कौन किसी की रोटियाँ खिला देता है। रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी। हरिया जा, बाहर से शतरंज उठा ला। मीर साहब से कहना, मियाँ अब न खेलेंगे; आप तशरीफ़ ले जाइए।

मिरज़ा–हाँ-हाँ, कहीं ऐसा गज़ब भी न करना। ज़लील करना चाहती हो क्या? ठहर हरिया, कहाँ जाती है।

बेगम–जाने क्यों नहीं देते? मेरा ही खून पिए, जो उसे रोके। अच्छा, उसे रोका, मुझे रोको, तो जानूँ?

यह कहकर बेगम साहबा झल्लाई हुई दीवानख़ाने की तरफ़ चलीं। मिरज़ा बेचारे का रंग उड़ गया। बीबी की मिन्नतें करने लगे–खुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसैन की कसम है।

निगोड़ी-स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक गाली (यहाँ प्यार-भरा संबोधन)

नौज-ईश्वर न करे

मुलाहिजा-लिहाज़

ज़लील-अपनानित

हज़रत हुसैन-पैगबंर मोहम्मद साहब के नवासे (धेवते)
(शिया समुदाय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व)

टिप्पणी

मैयत-लाश, अरथी, शवयात्रा

लौ-लपट, किंतु यहाँ अर्थ है– ईश्वर से संबंध

ताम्मुल-हिचकिचाहट

गुस्सेवर-क्रोधवाली

मुनासिब-ठीक, उचित

सरोकार-संबंध

फ़रियाद - प्रार्थना

भाँड़-राजाओं-अमीरों की प्रशंसा गाने वाले

मेरी ही मैयत देखे, जो उधर जाय। लेकिन बेगम ने एक न मानी। दीवानख़ाने के द्वार तक गईं, पर एकाएक पर-पुरुष के सामने जाते हुए पाँव बँध-से गए। भीतर झाँका, संयोग से कमरा खाली था। मीर साहब ने दो-एक मुहरे इधर-उधर कर दिये थे, और अपनी सफ़ाई जताने के लिए बाहर टहल रहे थे। फिर क्या था, बेगम ने अंदर पहुँच कर बाज़ी उलट दी, मुहरे कुछ तख़्त के नीचे फेंक दिए, कुछ बाहर और किवाड़ अंदर से बंद करके कुंडी लगा दी। मीर साहब दरवाज़े पर तो थे ही, मुहरे बाहर फेंके जाते देखे, चूड़ियों की झनक भी कान में पड़ीं। फिर दरवाज़ा बंद हुआ, तो समझ गये, बेगम साहिबा बिगड़ गईं। चुपके से घर की राह ली।

मिरज़ा ने कहा–तुमने गज़ब किया!

बेगम–अब मीर साहब इधर आए, तो खड़े-खड़े निकलवा दूँगी। इतनी लौ खुदा से लगाते, तो वली हो जाते। आप तो शतरंज खेलें, और मैं यहाँ चूल्हे-चक्की की फ़िक्र में सिर खपाऊँ! जाते हो हकीम साहब के यहाँ कि अब भी ताम्मुल है।

चित्र 19.3

मिरज़ा घर से निकले, तो हकीम के घर जाने के बदले मीर साहब के घर पहुँचे और सारा वृत्तांत कहा। मीर साहब बोले–मैंने तो जब मुहरे बाहर आते देखे, तभी ताड़ गया। फ़ौरन भागा। बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं। मगर, आपने उन्हें यो सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं। उन्हें इससे क्या मतलब कि आप बाहर क्या करते हैं। घर का इंतज़ाम करना उनका काम है; दूसरी बातों से उन्हें क्या सरोकार?

मिरज़ा–ख़ैर, यह तो बताइए अब कहाँ जमाव होगा?

मीर–इसका क्या ग़म है। इतना बड़ा घर पड़ा हुआ है। बस यहीं जमे।

मिरज़ा–लेकिन बेगम साहिबा को कैसे मनाऊँगा? घर पर बैठा रहता था तब तो इतना बिगड़ती थीं; यहाँ बैठक होगी, तो शायद जिंदा न छोड़ेंगी।

मीर–अजी बकने भी दीजिए, दो-चार रोज़ में आप ही ठीक हो जाएँगी। हाँ, आप इतना कीजिए कि आज से ज़रा तन जाइए।

राज्य में हाहाकार मचा हुआ था। प्रजा दिन-दहाड़े लूटी जाती थी। कोई फ़रियाद सुनने वाला न था। देहातों की सारी दौलत लखनऊ में खिंची आती थी और वह वेश्याओं में, भाँडों में और विलासिता के अन्य अंगों की पूर्ति में उड़ जाती थी। अंग्रेज़ कम्पनी का ऋण दिन-दिन बढ़ता जाता था। कमली दिन-दिन भीगकर भारी होती जाती थी। देश में

टिप्पणी

सुव्यवस्था न होने के कारण वार्षिक कर भी वसूल न होता था। रेजीडेंट बार-बार चेतावनी देता था, पर यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी।

ख़ैर, मीर साहब के दीवानखाने में शतरंज होते कई महीने गुज़र गए। नए-नए नक्शे हल किए जाते; नए-नए किले बनाए जाते; नित्य नई व्यूह-रचना होती; कभी-कभी खेलते-खेलते झौड़ हो जाती; तू-तू-मैं-मैं की नौबत आ जाती; पर शीघ्र की दोनों मित्रो में मेल हो जाता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि बाज़ी उठा दी जाती; मिरज़ा जी रूठकर अपने घर चले जाते। मीर साहब अपने घर में जा बैठते। पर, रात भर की निद्रा के साथ सारा मनोमालिन्य शांत हो जाता था। प्रात:काल दोनों मित्र दीवानखाने में आ पहुँचते थे।

एक दिन दोनों मित्र बैठे हुए शतरंज की दल-दल में गोते खा रहे थे कि इतने में घोड़े पर सवार एक बादशाही फ़ौज का अफ़सर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ पहुँचा। मीर साहब के होश उड़ गए। यह क्या बला सिर पर आई। यह तलबी किसलिए हुई है? अब ख़ैरियत नहीं नजर आती। घर के दरवाज़े बंद कर लिए। नौकरों से बोले-कह दो, घर में नहीं हैं।

सवार- घर में नहीं, तो कहाँ हैं?

नौकर–यह मैं नहीं जानता। क्या काम है?

सवार–काम तुझे क्या बताऊँगा? हुजूर में तलबी है। शायद फौज़ के लिए कुछ सिपाही माँगे गए हैं। जागीरदार हैं कि दिल्लगी! मोरचे पर जाना पड़ेगा तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

नौकर–अच्छा, तो जाइए, कह दिया जाएगा?

सवार–कहने की बात नहीं है। मैं कल खुद आऊँगा, साथ ले जाने का हुक्म हुआ है।

सवार चला गया। मीर साहब की आत्मा काँप उठी। मिरजा जी से बोले–कहिए जनाब, अब क्या होगा?

मिरज़ा–बड़ी मुसीबत है। कहीं मेरी तलबी भी न हो।

मीर–कम्बख़्त कल फिर आने को कह गया है।

मिरजा–आफ़त है, और क्या? कहीं मोरचे पर जाना पड़ा, तो बेमौत मरे।

मीर–बस, यही एक तदबीर है कि घर

चित्र 19.4

कमली-कंबल

रेज़ीडेंट-ब्रिटिश सरकार का अफ़सर

व्यूह-रचना - अपने बचाव और दुश्मन को फँसाने की युक्ति

झौड़-झड़प

मनोमालिन्य-मन मैला होना

बला-आफ़त, विपत्ति

तलबी-आदेशपूर्वक बुलाना

खैरियत-कुशलता

दिल्लगी-हँसी-मज़ाक

मोरचा-युद्ध

तदबीर-उपाय

टिप्पणी

वल्लाह–क्या ख़ूब!

मुँह अँधेरे–प्रातःकाल होने से पूर्व, तड़के

गिलौरियाँ–पान के बीड़े

वीरान–सुनसान

चिलम–तंबाकू पीने का मिट्टी का पात्र

संग्राम–क्षेत्र–लड़ाई का मैदान

मुलाज़िम–कर्मचारी

आफ़त–विपत्ति

ख़ौफ़–भय, डर

चकमा देना–चतुराईपूर्वक ध्यान हटाना

पर मिलो ही नहीं। कल गोमती पर कहीं वीराने में नक्शा जमे। वहाँ किसे खबर होगी। हज़रत आ कर आप लौट जाएँगे।

मिरज़ा–वल्लाह, आपको ख़ूब सूझी! इसके सिवाय और कोई तदबीर ही नहीं है।

दूसरे दिन से दोनों मित्र मुँह अँधेरे घर से निकल खड़े होते। बगल में एक छोटी-सी दरी दबाए डिब्बे में गिलौरियाँ भरे गोमती पार की एक पुरानी वीरान मसजिद में चले जाते, जिसे शायद नवाब आसिफ़उद्दौला ने बनवाया था। रास्ते में तम्बाकू, चिलम और मदरिया ले लेते, और मसजिद में पहुँच, दरी बिछा, हुक्का भरकर शतरंज खेलते बैठ जाते थे। फिर उन्हें दीन-दुनिया की फिक्र न रहती थी। किश्त, शह आदि दो-एक शब्दों के सिवा उनके मुँह से और कोई वाक्य नहीं निकलता था। कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा! दोपहर को जब भूख मालूम होती तो दोनों मित्र किसी नानबाई की दूकान पर जाकर खाना खाते, और एक चिलम हुक्का पीकर फिर संग्राम-क्षेत्र में डट जाते। कभी-कभी तो उन्हें भोजन का भी ख़्याल न रहता था।

इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी। कम्पनी की फ़ौजें लखनऊ की तरफ बढ़ी चली आती थीं। शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर, हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी ज़रा भी फिक्र न थी। वे घर से आते, तो गलियों में होकर। डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाय, जो बेकार में पकड़े जाएँ। हज़ारों रुपये सालाना की जागीर मुफ़्त ही हजम करना चाहते थे।

एक दिन दोनों मित्र मसजिद के खडंहर में बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। मीर की बाजी कुछ कमज़ोर थी। मिरज़ा साहब उन्हें किश्त-पर-किश्त दे रहे थे। इतने में कम्पनी के सैनिक आते हुए दिखाई दिए। वह गोरों की फ़ौज थी, जो लखनऊ पर अधिकार जमाने के लिए आ रही थी।

मीर साहब बोले–अंग्रेजी फ़ौज आ रही है; खुदा ख़ैर करे।

मिरज़ा–आने दीजिए, किश्त बचाइए। यह किश्त।

मीर–ज़रा देखना चाहिए, यहीं आड़ में खड़े हो जाएँ!

मिरज़ा–देख लीजिएगा, जल्दी क्या है, फिर किश्त!

मीर–तोपख़ाना भी है। कोई पाँच हज़ार आदमी होंगे, कैसे-कैसे जवान हैं। लाल बन्दरों के -से मुँह। सूरत देख कर ख़ौफ़ मालूम होता है।

मिरज़ा–जनाब, हीले न कीजिए। ये चकमे किसी और को दीजिएगा। यह किश्त...

मीर–आप भी अजीब आदमी हैं। यहाँ तो शहर पर आफत आई हुई है और आपको किश्त की सूझी है। कुछ इसकी भी खबर है कि शहर घिर गया तो घर कैसे चलेंगे?

मिरज़ा–जब घर चलने का वक्त आयेगा, तो देखा जाएगा–यह किश्त! बस अब की शह में मात है।

फ़ौज निकल गई। दस बजे का समय था। फिर बाज़ी बिछ गई।

मिरज़ा–आज खाने की कैसे ठहरेगी?

मीर–अजी, आज तो रोज़ा है। क्या आपको ज़्यादा भूख मालूम होती है?

मिरज़ा–जी नहीं। शहर में न जाने क्या हो रहा है!

मीर–शहर में कुछ न हो रहा होगा। लोग खाना खा-खाकर आराम से सो रहे होंगे। हुज़ूर नवाब साहब भी ऐशगाह में होंगे।

दोनों सज्जन फिर जो खेलने बैठे, तो तीन बज गए। अब की मिरज़ा जी की बाज़ी कमजोर थी। चार का गजर बज ही रहा था कि फ़ौज की वापसी की आहट मिली। नवाब वाजिदअली पकड़ लिए गए थे और सेना उन्हें किसी अज्ञात स्थान को लिए जा रही थी। शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट। एक बूँद भी ख़ून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह ख़ून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बन्दी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी।

मिरज़ा ने कहा–हुज़ूर नवाब साहब को ज़ालिमों ने कैद कर लिया है।

मीर–होगा, यह लीजिए शह।

मिरज़ा–जनाब ज़रा ठहरिए। इस वक्त इधर तबीयत नहीं लगती। बेचारे नवाब साहब इस वक्त ख़ून के आँसू रो रहे होंगे।

मीर–रोया ही चाहें। यह ऐश वहाँ कहाँ नसीब होगा। यह किश्त।

मिरजा–किसी के दिन बराबर नहीं जाते। कितनी दर्दनाक हालत है।

मीर–हाँ, सो तो है ही–यह लो, फिर किश्त । बस, अब की किश्त में मात है, बच नहीं सकते।

मिरज़ा–खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देख कर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिदअली शाह!

मीर–पहले अपने बादशाह को तो बचाइए फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा। यह किश्त और यह मात! लाना हाथ!

बादशाह को लिए हुए सेना सामने से निकल गई। उनके जाते ही मिरज़ा ने फिर बाज़ी

टिप्पणी

रोज़ा-उपवास (मुसलमानों द्वारा रमज़ान के महीने में इबादत के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक अन्न-जल का त्याग)

वली - सिद्ध पुरुष

ऐशगाह-मौज़-मस्ती का स्थान

गजर-घड़ी का घंटा

हीले-बहाने

अध:पतन-गिरावट

जालिम-अत्याचारी

हादसा-दुर्घटना

मातम-शोक

टिप्पणी

मरसिया-शोकगीत

अबाबील-एक पक्षी

सूरमा- वीर

बेढब- बिना ढंग का

प्रतिकार- बदला

उग्र होना- बढ़ना, तेज होना

दाद- तारीफ, वाहवाही, प्रशंसा

सनद- प्रमाण

कयामत-दुनिया के समाप्त होने का समय, प्रलय

बिछा दी। हार की चोट बुरी होती है। मीर ने कहा–आइए, नवाब साहब के मातम में एक मरसिया कह डालें। लेकिन, मिरज़ा की राजभक्ति अपनी हार के साथ लुप्त हो चुकी थी। वे हार का बदला चुकाने के लिए अधीर हो रहे थे।

शाम हो गई। खंडहर में चमगादड़ों ने चीखना शुरू किया। अबाबीलें आ-आ कर अपने-अपने घोंसलों में चिमटीं। पर दोनों खिलाड़ी डटे हुए थे, मानो दो ख़ून के प्यासे सूरमा आपस में लड़ रहे हों। मिरज़ा दो-तीन बाज़ियाँ लगातार हार चुके थे; इस चौथी बाज़ी का रंग भी अच्छा न था। वो बार-बार जीतने का दृढ़ निश्चय कर सँभलकर खेलते थे, लेकिन एक न एक चाल ऐसी बेढब आ पड़ती थी, जिससे बाज़ी खराब हो जाती थी। हर बार हार के साथ प्रतिकार की भावना और भी उग्र होती थी। उधर मीर साहब मारे उमंग के गज़लें गाते थे, चुटकियाँ लेते थे, मानो कोई गुप्त धन पा गए हों। मिरज़ा जी सुन-सुन कर झुँझलाते और हार की झेंप को मिटाने के लिए उनकी दाद देते थे। पर ज्यों-ज्यों बाज़ी कमज़ोर पड़ती थी, धैर्य हाथ से निकल जाता था। यहां तक कि वो बात-बात पर झुँझलाने लगे–जनाब, आप चाल बदला न कीजिए। यह क्या कि एक चाल चले, और फिर उसे बदल दिया। जो कुछ चलना हो, एक बार चल दीजिए यह आप मुहरे पर हाथ क्यों रखते हैं? मुहरे को छोड़ दीजिए। जब तक आपको चाल न सूझे, मुहरा छुइए ही नहीं। आप एक-एक चाल आधे घंटे में चलते हैं। इसकी सनद नहीं। जिसे एक चाल चलने में पाँच मिनट से ज़्यादा लगे, उसकी मात समझी जाय। फिर आपने चाल बदली। चुपके से मुहरा वहीं रख दीजिए।

मीर साहब का फ़रज़ी पिटता था। बोले–मैंने चाल चली ही कब थी?

मिरज़ा–आप चाल चल चुके हैं। मुहरा वहीं रख दीजिए–उसी घर में!

मीर–उस घर में क्यों रखूँ? मैंने हाथ से मुहरा छोड़ा ही कब था?

मिरज़ा–मुहरा आप कयामत तक न छोड़ें, तो क्या चाल ही न होगी? फरज़ी पिटते देखा तो धाँधली करने लगे।

चित्र 19.5

मीर–धाँधली आप करते हैं। हार-जीत तकदीर से होती है, धाँधली करने से कोई नहीं जीतता?

मिरज़ा–तो इस बाज़ी में तो आपकी मात हो गई।

मीर–मुझे क्यों मात होने लगी?

मिरज़ा–तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए, जहाँ पहले रक्खा था।

मीर–वहाँ क्यों रखूँ? नहीं रखता।

मिरज़ा–क्यों न रखिएगा? आपको रखना होगा।

तकरार बढ़ने लगी। दोनों अपनी-अपनी टेक पर अड़े थे। न यह दबता था न वह। अप्रासंगिक बातें होने लगीं, मिरज़ा बोले–किसी ने खानदान में शतरंज खेली होती, तब तो इसके कायदे जानते। वे हमेशा, घास छीला करते थे, आप शतरंज क्या खेलिएगा। रियासत और ही चीज़ है, जागीर मिल जाने से ही कोई रईस नहीं हो जाता।

मीर–क्या? घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं।

मिरज़ा–अजी, जाइए भी, गाज़ीउद्दीन हैदर के यहाँ बावरची का काम करते-करते उम्र गुज़र गई, आज रईस बनने चले हैं! रईस बनना कुछ दिल्लगी नहीं है।

मीर–क्यों अपने बुज़ुर्गों के मुँह में कालिख लगाते हो–वे ही बावरची का काम करते होंगे। यहाँ तो हमेशा बादशाह के दस्तरख़्वान पर खाना खाते चले आए हैं।

मिरजा–अरे चल चरकटे, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर।

मीर–ज़बान सँभालिए, वरना बुरा होगा। मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नहीं हूँ। यहाँ तो किसी ने आँखें दिखाईं कि उसकी आँखें निकाली। है हौसला?

मिरज़ा–आप मेरा हौसला देखना चाहते हैं, तो फिर आइए। आज दो-दो हाथ हो जाए, इधर या उधर।

मीर–तो यहाँ तुमसे दबनेवाला कौन है?

दोनों दोस्तों ने कमर से तलवारें निकाल लीं। नवाबी जमाना था; सभी तलवार, पेशकब्ज़, कटार वगैरह बाँधते थे। दोनों विलासी थे, पर कायर न थे। उनमें राजनीतिक भावों का अध:पतन हो गया था–बादशाह के लिए, बादशाहत के लिए क्यों मरे; पर व्यक्तिगत वीरता का

चित्र 19.6

टिप्पणी

तकदीर- भाग्य

तकरार- बहस

कायदा- नियम, तरीका

रियासत-राज्य

रईस-अमीर

चरकटे- चिरकुट/कपड़े का टुकड़ा (यहाँ दूसरे को हीन/तुच्छ बताने वाला अपशब्द)

टिप्पणी

अभाव न था। दोनों जख़्म खा कर गिरे, और दोनों ने वहीं तड़प-तड़प कर जानें दे दीं। अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखों से एक बूँद आँसू न निकला, उन्हीं दोनों प्राणियों ने शतरंज के वज़ीर की रक्षा में प्राण दे दिए।

अँधेरा हो चला था। बाज़ी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानो इन दोनों वीरों की मृत्यु पर रो रहे थे।

चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखतीं और सिर धुनती थीं।

–मुंशी प्रेमचंद

वजीर-मंत्री

मेहराब- ईरानी वास्तुकला में भवनों के द्वार की संरचना (चित्र देखें)

धूल-धूसरित-धूल से भरी अँटी हुई

क्रियाकलाप-19.1

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए:

1. भारतीय सैनिक सिर हथेली पर रखकर युद्ध कर रहे हैं।

2. उनके पाँव कब्र में लटके हैं, पर मोह माया के पीछे दौड़ना नहीं छोड़ा।

यह तो आप जानते ही हैं कि सिर को हथेली पर रखकर नहीं लड़ा जा सकता। इसी तरह यदि पाँव कब्र में लटके हुए हैं, तो दौड़ा जा सकता। इसका मतलब यह हुआ कि ये जो बातें कही गई हैं, उनका अर्थ इन शब्दों के प्रचलित अर्थ में नहीं है। जब हम पहले वाक्य पर गौर करते हैं, तो अर्थ निकलता है कि भारतीय सैनिक अपने सिर के कटने यानी जान जाने की परवाह किये बिना लड़ रहे हैं। इसी तरह दूसरे वाक्य में कब्र में पैर लटके होने का अर्थ निकलता है कि व्यक्ति विशेष की उम्र ढल चुकी है।

यदि शब्द अपने प्रचलित अर्थ यानी मुख्यार्थ यानी अभिधा को छोड़कर अन्य अर्थ को प्रकट करें, तो साहित्य में उसे लक्षणा कहते हैं।

मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों का मुख्य यानी प्रचलित अर्थ नहीं होता, बल्कि लाक्षणिक अर्थ होता है। दूसरी बात यह है कि मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, बल्कि किसी वाक्य में ही प्रयोग होता है। तीसरी बात यह कि वह लोगों के मुँह पर इतना चढ़ा होता है कि सुनने वाला मुहावरे के अर्थ को तत्काल समझ लेता है। इन बातों के संदर्भ में उपर्युक्त वाक्यों पर फिर से गौर कीजिए। इनमें प्रयुक्त मुहावरे नीचे दिए जा रहे हैं, उनका अर्थ उनके आगे लिखिए:

सिर हथेली पर रखना – .....

कब्र में पाँव लटका होना – .....

टिप्पणी

नीचे कुछ ऐसे मुहावरों के अर्थ दिए जा रहे हैं, जो इस पाठ में प्रयुक्त हुए हैं। इन अर्थों के आगे नीचे कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उपयुक्त मुहावरे लिखिए:

(i) किसी चीज की आदत पड़ना –

(ii) इरादा भाँप जाना –

(iii) कठोरता से पेश आना –

(iv) झगड़ा होना–

(v) बहुत तकलीफ़ में होना–

(vi) किसी बात की चिंता न होना–

(खून के आँसू रोना, ताड़ जाना, लौ लगाना, चाट पड़ना, रंग उड़ना, तन जाना, कमली भारी होना, तू-तू-मैं-मैं होना, दीन-दुनिया की फिक्र न होना)

आइए समझें

'बहादुर' कहानी को पढ़ते हुए आप जान चुके हैं कि कहानी को मुख्यत: कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा-शैली और परिवेश के आधार पर समझा जाता है। कहानी को इन तत्त्वों के आधार पर समझने की शुरूआत आधुनिक कहानी के आरंभिक दौर में हुई। बाद में जब कहानी विधा का विकास हुआ, तो कहानीकारों ने अपनी बात कहने के अलग-अलग अंदाज़ अपनाए। इसलिए, बाद की कहानियों में इन सभी तत्त्वों में से कभी किसी को तो कभी किसी दूसरे को प्रमुखता मिलती रही। 'बहादुर' कहानी में बहादुर का चरित्र प्रमुख है, तो 'शतरंज के खिलाड़ी' में परिवेश।

आइए, इस कहानी पर विचार करें।

19.2.1 कथावस्तु

आप 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ चुके हैं। आपने गौर किया होगा कि कहानी की शुरुआत एक भूमिका से होती है और इस भूमिका के बाद कहानी के मुख्य पात्र मीर और मिरज़ा हमारे सामने आते हैं। दरअसल, यह भूमिका इस कहानी की मूल कथावस्तु को समझने के लिए बहुत आवश्यक है। यहाँ कहानीकार पराधीन भारत के एक प्रमुख सत्ता-केंद्र लखनऊ के सामाजिक-राजनीतिक वातावरण की चर्चा करता है। इस चर्चा में वह शासक-वर्ग से लेकर आम जनता तक को विलासिता यानी अय्याशी में

डूबा दिखाता है। छोटे-बड़े–सभी नाच-गाने, पहनने-ओढ़ने, मनोरंजन-नशे में मस्त हैं। यहाँ तक कि शासन-व्यवस्था से जुड़े अधिकारी, साहित्यकार, कलाकार और व्यापारी-उद्यमी भी विलास-सामग्री के उपभोग, प्रचार और निर्माण में जुटे हैं। शासक-वर्ग से शुरू हुआ यह अय्याशी का जीवन आम जनता को भी लुभा चुका है और उनको अकर्मण्य बना चुका है। दुर्व्यसनों और लतों में सिर से पैर तक डूबे लोग अब उनका औचित्य भी सिद्ध करने लगे हैं। उनके तर्क होते थे कि शतरंज, ताश, गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है, पेचीदे मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है। लेखक ने नागरिकों की इस मन:स्थिति का चित्रण करते हुए अपने युग में भी विद्यमान इस प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस संप्रदाय के लोगों से दुनिया खाली नहीं है। यही नहीं वह आगे कई बार अपनी यह टिप्पणी भी रखता है- "यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी।"

प्रेमचंद यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का ज़िम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर भोग-विलास में डूबा जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता। इस कहानी का यह संदेश भी है कि यदि देश को दासता से बचाना है तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का बोध होना चाहिए। मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली तो कहानी के पात्र मात्र हैं; इनके माध्यम से प्रेमचंद ने एक वर्ग की प्रवृत्तियों की ओर संकेत किया है। ऐसी प्रवृत्तियाँ अंतत: आत्मघाती भी होती हैं। यदि हम देश पर आए संकट के समय जोखिम के डर से स्वार्थी हो जाएँ तो देश का संकट हमारा भी संकट बन जाएगा।

इस कहानी में राजा तथा प्रजा की दु:खद स्थिति का चित्रण भी प्रेमचंद ने किया है। प्रजा, विशेष रूप से गाँवों में रहने वाले किसानों से कर के रूप में वसूला गया धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शानो-शौकत और उनकी विलासिता में खर्च कर दिया जाता था। तत्कालीन नवाबों को अपनी गरीब जनता की कोई फ़िक्र नहीं थी। इसी बात का फायदा अंग्रेजों को मिला।

शासक वर्ग की कर्त्तव्यहीनता की चरम परिणति तब दिखाई पड़ती है, जब लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह को अंग्रेज़ कैद कर लेते हैं। तब भी उनके रहमों-करम पर पलने वाले मीर और मिरज़ा उनके शोक में डूबने के बजाय उनका उपहास उड़ाते हैं। इस अंश में ऐसी पराजय का जिक्र किया गया है, जिसमें न कोई मार-काट थी, न एक बूंद खून गिरा था। यह अहिंसा न थी बल्कि घोर कायरपन था जिसका परिणाम राज्य की प्रजा को भुगताना पड़ा। वास्तव में शासक-वर्ग में जो जोश और उबाल होना चाहिए था वह था ही नहीं। प्रेमचंद ने इस स्थिति पर बड़ा ही मार्मिक व्यंग्य किया है, यह कहकर कि, "आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम

टिप्पणी

सीमा थी।'' जानते हैं इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद क्या कहना चाहते हैं? प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से हमारे देश के गुलाम होने की प्रक्रिया और उसके कारणों की ओर संकेत किया है।

क्रियाकलाप-19.2

नीचे 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी से तीन ऐसे वाक्य दिए जा रहे हैं, जिनमें मुहावरों का प्रयोग है। उनमें प्रयुक्त मुहावरे और उनके अर्थ भी दिए जा रहे हैं। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाइए:

1. यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी।

   - कानों पर जूँ न रेंगना- किसी बात पर ध्यान न देना/ किसी बात का असर न होना

     वाक्य-प्रयोग: .....

2. मिरजा दो-तीन बाज़ियाँ लगातार हार चुके थे, इस चौथी बाजी का रंग भी अच्छा न था।

   - रंग अच्छा न होना- असफलता, अकुशलता आदि की आशंका

     वाक्य-प्रयोग :.....

3. खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखती और सिर धुनती थीं।

   - सिर धुनना- शोक प्रकट करना/दुखी होना/शोक मनाना

     वाक्य-प्रयोग:.....

नीचे कुछ मुहावरें और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

- दाँतों तले उँगली दबाना- आश्चर्यचकित हो जाना

  वाक्य-प्रयोग:

- कान का कच्चा होना- सुनी हुई बात पर बिना सोचे-समझे यकीन करना

  वाक्य-प्रयोग: .....

- दिन-रात एक करना- बहुत परिश्रम करना/किसी काम में जुटे रहना

  वाक्य-प्रयोग: .....

टिप्पणी

19.2.2 पात्र और चरित्र-चित्रण

आइए, अब इस कहानी के प्रमुख पात्रों के कार्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं। देखते हैं कि लेखक ने उनका चरित्र-चित्रण किस प्रकार किया है।

कहानी के मुख्य पात्र हैं- मिरज़ा साहब और मीर साहब। इन दोनों के व्यक्तित्व में अनेक समानताएँ हैं, क्योंकि ये एक ही वर्ग के हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों की समान प्रवृत्तियों के आधार पर तत्कालीन वातावरण को भी चित्रित करने का प्रयास किया है। वातावरण में जो विलासिता फैली थी, उससे ये भी ग्रस्त थे। इनके अतिरिक्त कहानी के अन्य पात्र हैं– मिरज़ा साहब की बेगम, बादशाही सवार और नौकरानी हरिया आदि। सबसे पहले हम मिरज़ा साहब के व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझते हैं।

मिरज़ा साहब का पूरा नाम मिरज़ा सज्जाद अली था। वे लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के एक जागीरदार थे। उन्हें अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं थी, क्योंकि उनके पास पैतृक संपत्ति थी। उन्हें शतरंज खेलने का बेहद शौक था या कहें कि बुरी लत थी। वे बेहद आलसी और कामचोर इंसान थे। उनकी शतरंज खेलने की आदत के बारे में उनके आस-पास के लोग नौकर और चाकर भी अच्छी राय नहीं रखते तथा उनकी बुराई करते रहते हैं। मिरज़ा साहब शतरंज के खेल में इतने डूब जाते कि घर की चिंता करना भी छोड़ देते। इसलिए उनकी बेगम भी उनसे परेशान रहती थी और हमेशा मिरज़ा साहब को लताड़ती रहती थी। वे यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का जिम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर विलास में डूब जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।

'शतरंज के खिलाड़ी' एक विशिष्ट प्रकार के ऐतिहासिक परिवेश को व्यक्त करने वाली कहानी है इसलिए इसमें पात्रों की अधिक संख्या पर बल नहीं है। इसीलिए आप यह पाएंगे कि मिर्जा और मीर अली अलग-अलग पात्र होते हुए भी एक ही वर्ग और एक ही तरह के प्रवृत्तियों को व्यक्त करने वाले पात्र हैं। इनमें समानताएँ अधिक हैं, अंतर कम।

यह तो आप जानते ही होंगे कि निर्भीकता और स्वाभिमान का संबंध श्रम और संघर्ष से है। मिरज़ा और मीर दोनों ही बाप-दादाओं को मिली जागीरों पर ज़िंदा हैं, उन्हें आजीविका की कोई चिंता नहीं बल्कि पैतृक संपत्ति ने इन्हें कामचोर, विलासी, कायर और डरपोक बना दिया है। इसलिए मिरज़ा बेगम से भी डरते हैं और बादशाही फौजों से भी, साथ ही अंग्रेज़ी सेना से भी। बेगम के सामने मिरज़ा झूठ तक बोलते हैं। यह दिखाते हैं मानो वे स्वयं तो शतरंज नहीं खेलना चाहते, मीर अली ही उन्हें विवश करते हैं।

मिरजा जिस प्रकार से परिवार की चिंता नहीं करते उसी प्रकार पूरे लखनऊ की भी चिंता नहीं करते। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि लखनऊ के बादशाह को बंदी बना लिया गया है। वे सुविधाओं को छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकते। वे सुख-विलास के बिना रह नहीं सकते। उनकी इस आदत ने उन्हें कायर बना दिया है। प्रेमचंद मिरज़ा और मीर के शतरंज-प्रेम की कथा कहते हुए बीच-बीच में लखनऊ की त्रासद स्थिति का

टिप्पणी

वर्णन करते हैं। वे यह बताना चाहते हैं कि ऐसी स्थिति में भी मिरजा और मीर के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। वे अपनी लत में डूबे हुए हैं। कहीं-कहीं उनकी इस लत पर प्रेमचंद व्यंग्य करते हुए कहते हैं- ''कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा।''

गोरों की फौज ने जब नवाब वाजिद अली को बंदी बना लिया तो मिरज़ा, मीर अली से कहते हैं- 'खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह।' पर इससे यह न समझिए कि मिरज़ा को नवाब के गिरफ्तार होने पर दुख है, बल्कि मिरज़ा शतरंज में मीर अली से हार रहे हैं और उनका ध्यान भटकाने के लिए ऐसा कह रहे हैं। यह भी उनके शतरंज-प्रेम में डूबे होने का संकेत करता है, राजभक्ति की ओर नहीं। लेखक ने इस विषय में स्पष्ट लिखा है, ''मिरज़ा की राजभक्ति अपनी हार के साथ लुप्त हो चुकी थी। वे हार का बदला चुकाने के लिए अधीर हो रहे थे।''

मिरज़ा देश की हार देख सकते थे, शतरंज की हार नहीं। वे उस वक्त झुँझलाते, परेशान होते हैं जब शतरंज में मीर अली से हारते हैं। उन्हें देश के गुलाम होने पर भी क्रोध नहीं आता, तब आता है जब उनके पुरखों के विषय में मीर अली इधर-उधर की बातें करते हैं। अर्थात् विलासी जीवन झूठी शानो-शौकत के बल पर चलता है, यदि इस शानो-शौकत पर कहीं से आँच आती है तो बर्दाश्त नहीं हो पाता। व्यक्तिगत वीरता जाग उठती है। लेकिन वह व्यक्तिगत वीरता किस काम की जो देश के काम न आए और आत्मघाती बन जाए। मिरज़ा के व्यवहार को इसी आधार पर देखा जा सकता है। वस्तुतः इस शानो-शौकत के मूल में कायरता ही है, ऐसी कायरता, जिसके विषय में प्रेमचंद ने लिखा- ''यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं।''

मीर साहब का पूरा नाम मीर रौशन अली है। इनके पास भी मिरज़ा साहब की तरह पैतृक जागीरदारी है। इन्हें भी अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं। हमेशा शतरंज खेलना तथा पान, हुक्का, चिलम जैसे मादक पदार्थों का सेवन करना इनकी आदत है। इनकी इस आदत ने इनके स्वाभिमान को नष्ट कर दिया है। मिरज़ा साहब की पत्नी इनसे बेहद नफरत करती हैं फिर भी ये मिरज़ा साहब वे घर जाना नहीं छोड़ा। मीर साहब को मिरज़ा की बेगम का बोलना बुरा लगता है, इसलिए वे मिरज़ा साहब को बेगम के सामने तनकर रहने की नसीहत देते हैं।

मीर साहब बहुत डरपोक और कायर इंसान हैं। मिरज़ा की बेगम के गुस्से के डर से वे भाग जाते हैं। एक बार जब बादशाही फौज का अफसर इनका नाम पूछता हुआ आता है तो इनके होश उड़ जाते हैं। भागने में ही ये अपनी भलाई समझते हैं। घर के दरवाज़े बंद करके नौकर को बोलते हैं कि उन्हें कह दो कि घर में नहीं हैं। अर्थात झूठ बोलना इन्हें भी आता है। शतरंज खेलने में बेईमानी भी करते हैं। यही बेईमानी और झूठी अकड़ मिरज़ा की तरह उनकी भी मृत्यु का कारण बनती है।

पाठगत प्रश्न-19.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' के माध्यम से दिखाया गया है:

   (क) अंग्रेज शासकों का दमन ☐ (ख) भारतीय शासकों का पतन ☐

   (ग) शतरंज के खेल का महत्त्व ☐ (घ) हारने वाले खिलाड़ी का द्वेष ☐

2. मिरज़ा साहब में मीर साहब के प्रति प्रतिकार की भावना आती जा रही थी क्योंकि–

   (क) वे उनके कट्टर शत्रु थे। ☐

   (ख) वे शतरंज में लगातार हार रहे थे। ☐

   (ग) उनकी बेगम ने उन्हें भड़काया था। ☐

   (घ) उन्हें सिपाही उकसाते थे। ☐

3. वाजिदअली शाह के बंदी बनाए जाने का मिरज़ा और मीर को कोई मलाल नहीं था, क्योंकि–

   (क) वे उससे ईर्ष्या करते थे ☐

   (ख) वे अंग्रेज़ों के समर्थक थे। ☐

   (ग) शतरंज का बादशाह अधिक महत्त्वपूर्ण था ☐

   (घ) उन्हें अंग्रेज़ी फौज से डर लगता था। ☐

19.2.3 संवाद-योजना

'बहादुर' पाठ में आप जान ही चुके हैं कि पात्रों की बातचीत को संवाद कहा जाता है। संवाद कहानी के घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं, चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताते हैं और कहानी में नाटकीयता का गुण उत्पन्न करते हैं। कहानी को रोचक बनाने में भी संवादों की बड़ी भूमिका होती है।

यों तो 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में प्रेमचंद ने सीधे-सीधे तत्कालीन वातावरण का वर्णन किया है, पर इस कहानी में संवाद भी कम नहीं हैं। प्रेमचंद ने संवादों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया है। जब वे पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताना चाहते हैं, तो बीच-बीच में संवादों का भी सहारा लेते हैं, उदाहरण के लिए एक स्थान पर जब बेगम साहिबा कहती हैं कि- ''क्या पान माँगें हैं? कह दो, आकर ले जाएँ। खाने की फुरसत नहीं है, ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहें कुत्ते को खिलाएँ।'' इस संवाद से बेगम साहिबा की मन:स्थिति का बोध होता है जिसमें क्रोध और झल्लाहट है।

टिप्पणी

एक अन्य स्थान पर मिरज़ा साहब कहते हैं- ''ख़ुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसैन की कसम है। मेरी मैयत ही देखे, जो उधर जाए।'' यह संवाद मिरज़ा साहब के अपमानित होने के डर को व्यक्त करता है।

आपने कहानी पढ़ते समय ध्यान दिया होगा कि मीर साहब बेगम साहिबा के प्रति कैसा सोच रखते हैं। मीर साहब का कथन- ''बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं। मगर आपने उन्हें यों सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं। उन्हें इससे क्या मतलब कि आप बाहर क्या करते हैं। घर का इंतजाम करना उनका काम है; दूसरी बातों से उन्हें क्या सरोकार?'' से पता चलता है कि वे बेगम और अन्य औरतों के प्रति क्या राय रखते हैं। उनकी नज़र में घर की औरतों का काम सिर्फ घर तक ही सीमित है। उन्हें वे सम्मान नहीं देते।

इसी प्रकार जब मिरज़ा मीर को बताते हैं कि नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेजों ने कैद कर लिया है तो मीर की बेफ़िक्री और मिरज़ा की झूठी सहानुभूति निम्नलिखित संवादों से प्रकट होती है।

मिरज़ा-किसी के दिन बराबर नहीं जाते। कितनी दर्दनाक हालत है।

मीर-हाँ सो तो है ही- यह लो, फिर किश्त! बस अब की किश्त में मात है, बच नहीं सकते।

मिरज़ा-खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह।

यहाँ मिरजा का कहना **'हाय, गरीब वाजिदअली शाह'** एक गहरे व्यंग्य को प्रकट करता है। उनकी चापलूसी और झूठी सहानुभूति इसी एक वाक्य से प्रकट हो जाती है।

इस कहानी में जहाँ भी संवादों का प्रयोग हुआ है, वहाँ अधिक शब्द उर्दू अथवा फारसी शैली के हैं। इनसे कहानी में जीवंतता आ गई है तथा तत्कालीन लखनऊ के सामंती जीवन शैली तथा उनकी भाषा का बोध होता है। इन संवादों से हमें पात्रों की मन: स्थिति एवं उनके उद्देश्यों का सरलता से पता चलता है। कहानी में प्रयुक्त ऐसे संवादों से कहानी का स्वाभाविक विकास होता चला गया है। अत: इस कहानी का एक अति महत्वपूर्ण पक्ष है- इसकी संवाद-योजना, जो कहीं से कृत्रिम नहीं लगती और स्वाभाविक वातावरण का निर्माण करती है। संवाद पात्रानुकूल है। उनमें चुटीलापन है, भावानुकूलता है (क्रोध आदि की) सहजता है, और स्वाभाविकता है।

क्रियाकलाप-19.3

आप कुछ मुहावरों और उनके अर्थों से परिचित हो चुके हैं। कुछ मुहावरे ऐसे भी होते हैं, जो कुछ-कुछ मिलते-जुलते से अर्थ रखते हैं। आगे ऐसे ही कुछ मुहावरे दिए जा रहे हैं, इन पर ध्यान दीजिए:

टिप्पणी

- किसी बात का असर न होना
  (i) कान पर जूँ न रेंगना
  (ii) चिकना घड़ा होना
  (iii) कान में तेल डालकर बैठना
- भागकर ओझल हो जाना
  (i) नौ दो ग्यारह होना
  (ii) रफू-चक्कर होना
  (iii) सिर पर पैर रखकर भागना

अब नीचे कुछ अर्थ दिए जा रहे हैं, इन अर्थों के लिए उपयुक्त तीन-तीन मुहावरे कोष्ठक में से छाँटकर लिखिए:

1. आश्चर्यचकित रह जाना
   (i)
   (ii)
   (iii)
2. बहुत परिश्रम करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
3. दुश्मन को परास्त करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
4. बरबाद करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
5. अत्यधिक प्रिय होना
   (i)
   (ii)
   (iii)

(आँख का तारा होना, एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना, दाँतों तले उंगली दबाना, ठगे से रह जाना, दाँत खट्टे करना, तहस-नहस करना, जान से प्यारा होना, नामोनिशान मिटा देना, धूल चटाना, मुट्ठी में कर लेना, दिन-रात एक करना, लोहा मनवाना, कलेजे का टुकड़ा होना, साध लेना, आँखे फटी रह जाना, मटियामेट कर देना, पसीना बहाना, कहीं का न रहना।)

टिप्पणी

19.2.4 देशकाल और वातावरण

आप यह पहले ही जान चुके हैं कि 'शतरंज के खिलाड़ी' एक वातावरण प्रधान कहानी है। इस तरह की कहानियों में केन्द्र के वातावरण होता है। कहानी के अन्य तत्त्व भी वातावरण की ही अभिव्यक्ति करते हैं। इस कहानी में जितनी भी घटनाएँ है, वे अवध की हैं। अवध राज्य का वातावरण इसमें अभिव्यक्त हुआ है। कहानी में जिस समय का वर्णन है, वह 1857 के आस-पास का है। आप जानते ही हैं कि भारतीय इतिहास में 1857 का क्या महत्त्व है। सन् 1857 में हमारा पहला स्वाधीनता-आंदोलन हुआ था। यह आंदोलन सफल न हो पाया और भारत अंग्रेजों का पूरी तरह से गुलाम हो गया। इस कहानी में भारत के राज्यों में से एक अवध के पतन की प्रक्रिया का चित्रण है।

कहानी के आरंभ में ही कहानी के मूल उद्देश्य के अनुसार वातावरण निर्मित किया गया है। लेखक ने स्पष्ट रूप से कहानी के देशकाल का उल्लेख किया है- ''वाजिद अली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था।'' यहाँ पर लखनऊ से तात्पर्य लखनऊ की समस्त जनता और शासकों से है। लेखक ने लिखा है कि अमीर और गरीब सभी किसी-न-किसी लत तथा विलासिता में डूबे थे। जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे छूटा न था। सभी एक-दूसरे से निरपेक्ष थे। संसार में क्या हो रहा है। इसे जानने में किसी की दिलचस्पी न थी। फकीरों को पैसे मिलते, तो वे भी रोटियाँ न लेकर अफ़ीम खाते या शराब पीते।

क्या आप जानते हैं कि ऐसी स्थिति कब होती है? जी हाँ, जब शासक-वर्ग के लोग पूरी तरह से निकम्मे हो जाएँ और विलास में डूब जाएँ। हमारे देश में जैसे-जैसे अंग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे यहाँ के शासक संघर्ष का रास्ता छोड़कर, समर्पण का रास्ता अपनाकर व्यक्तिगत राग-रंग में डूब रहे थे। कभी-कभी शासक-वर्ग अपनी इस विलासिता को नैतिक ठहराने का भी प्रयास करता है। जब समाज के जिम्मेदार वर्ग की यह मानसिकता हो जाती है तो निचले वर्ग पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। शतरंज के खिलाड़ी में ऐसी ही स्थिति को अभिव्यक्त किया गया है।

'शंतरंज के खिलाड़ी' में एक स्थान पर लखनऊ में बढ़ी आती गोरों की फ़ौज का वर्णन है। इस फ़ौज का कहीं कोई विरोध नहीं होता। यहाँ तक कि नवाब वाजिदअली शाह के बारे में मीर रोशन अली कहते हैं, ''शहर में कुछ न हो रहा होगा। लोग खाना खा-खाकर आराम से सो रहे होंगे। हजूर साहब भी ऐशगाह में होंगे।'' यह वह वातावरण है जिसमें न नवाबों को जनता की चिंता है, न पराजय की; न जनता को किसी की चिंता है। सब एक-दूसरे से अलग, टूटे हैं। इसी के लिए तुलसीदास ने लिखा था- प्रजा पतित पाखण्ड पापरत अपने-अपने रंग रई है। इस वातावरण की तुलना हम अंधेर नगरी के वातावरण से कर सकते है। संघर्ष के लिए गुलामी से बचने के लिए सामूहिक-एकता की जरूरत होती है, जो उस समय के वातावरण में नहीं है, जिस समय के वातावरण पर यह कहानी लिखी गई है। प्रेमचंद लिखते हैं:

"शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट। एक बूँद भी खून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते है। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा था।"

इस अवसर पर प्रेमचंद ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि अहिंसा और कायरता में बहुत अंतर है। बिना संघर्ष किए गुलाम हो जाना या बने रहना कायरता है, अहिंसा नहीं। अहिंसा संघर्ष की विरोधी नहीं समर्थक है। इस तरह एक समय के वातावरण-चित्रण के माध्यम से प्रेमचंद अपने समय के लोगों का स्वाधीनता के लिए आह्वान कर रहे थे और प्रत्येक समय में रहनेवाली जनता को यह समझा रहे थे कि स्वाधीनता को बचाने के लिए सामूहिकता, संघर्ष और एकता आवश्यक है।

मिरज़ा और मीर मौत के डर के कारण संघर्ष से बच रहे थे। क्या वे बच पाए? नहीं। व्यक्तिगत स्वार्थ का रास्ता मौत से बचा नहीं सकता। इससे अच्छा तो तब होता जब उनके जैसे लोग एकजुट होकर अंग्रेज़ों की फौज का सामना करते। तब यदि देश गुलाम भी हो जाता और वे मारे भी जाते तो उनकी मौत पर जनता रोती, शतरंज के मोहरे नहीं। कहानी के अंत में एक चित्र है-

"चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखतीं और सिर धुनती थीं।

यह चित्र उस अवध का है, जो गुलाम बन चुका है। सन्नाटा, खंडहर, टूटी मेहराबें, गिरी दीवारें, धूल-धूसरित मीनारें दासता से ग्रस्त, खंडित देश की तस्वीर है। इसका ज़िम्मेदार कौन है? जी हाँ मीर और मिरज़ा जैसे लोग, जिनकी आदतों के कारण ऐसी स्थिति आई। प्रेमचंद ने कहानी के इस अंतिम अंश में बड़ा ही मार्मिक व्यंग्य किया है।

पाठगत प्रश्न-19.2

सर्वाधिक उपयुक्त उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'घास तो आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं। यह कथन किस ओर संकेत करता है-

   (क) मीर की दिल्लगी ☐ (ख) मीर की प्रतिकार-भावना ☐

   (ग) मिरजा की हार ☐ (घ) मिरज़ा की जीत ☐

2. 'ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ या कुत्तों को खिलाएँ'- इस संवाद से बेगम साहिबा की किस विशेषता का पता चलता है?

टिप्पणी

(क) घृणा ☐ (ख) निराशा ☐

(ग) बौखलाहट ☐ (घ) क्रोध ☐

3. नवाब वाजिद अली शाह के बंदी बनाए जाने की घटना पर लखनऊवासियों के व्यवहार को लेखक कहता है–

(क) अहिंसा की भावना ☐ (ख) कर्तव्यनिष्ठा ☐

(ग) प्रतिकार का धैर्य ☐ (घ) कायरता ☐

19.2.5 भाषा-शैली

आपने इस कहानी की भाषा पर ध्यान दिया है? हाँ, यह कहानी भाषा की दृष्टि से अन्य कहानियों से भिन्न है। इसमें अरबी-फारसी के शब्दों का प्रवाहमय प्रयोग किया गया है, साथ ही तत्सम और तद्भव शब्दों का भी इस्तेमाल हैं। कहीं-कहीं अंग्रेज़ी के शब्द भी हैं। इस कहानी में हिन्दी भाषा का एक भिन्न रूप है, जिसे -हिंदुस्तानी' कहा जाता है। 'हिंदुस्तानी' भाषा का वह रूप है जो हिंदी और अरबी-फ़ारसी के लोक प्रचलित, सरल शब्दों के आधार पर बनी है। इसके साथ ही भाषा का यह रूप भारत की मिली-जुली संस्कृति को भी अभिव्यक्त करता है। भारत में हिंदी और उर्दू का विवाद बड़े लंबे समय तक चलता रहा। कुछ लोग हिंदी का पक्ष लेने के बहाने उर्दू का विरोध करते थे और कुछ लोग उर्दू के बहाने हिंदी का। हिंदी-उर्दू के विवाद के उस दौर में राजनीतिक क्षेत्र में गांधी जी ने और साहित्य-क्षेत्र में प्रेमचंद ने भाषा के इस मिले-जुले रूप की वकालत की थी, जो तत्कालीन समाज में आम लोगों की भाषा थी।

आइए, अब हम कहानी की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। कहानी को ध्यान से पढ़ने पर आपने देखा होगा कि कहानी में बहुत सारे अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है। वस्तुत: यह कहानी की माँग है, क्योंकि कहानी की पृष्ठभूमि और वातावरण के रूप में जिस स्थान और समय को चित्रित किया गया है, वह है– लखनऊ और वाजिदअली शाह का ज़माना। तब लखनऊ में अधिकांश लोग उर्दूभाषी थे तथा राज-काज की भाषा भी फ़ारसी थी। अत: कहानीकार के लिए यह स्वाभाविक था कि तत्कालीन परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग किया जाए। इससे कहानी में सजीवता एवं रोचकता का समावेश होता है तथा कहीं से बनावटीपन या कृत्रिमता नहीं झलकती है। इस कहानी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल है अर्थात् पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है। सभी पात्रों के संवादों से उनके व्यक्तित्व एवं उनकी सोच के बारे में पता चलता है। लखनऊ में जब वाजिदअली शाह को कैद कर लिया जाता है और मिरज़ा साहब जब यह बात मीर साहब को बताते हैं तो उनका यह कथन कि पहले अपने बादशाह को बचाइए फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा। न केवल उनके बादशाह के प्रति नजरिए को इंगित करता है बल्कि शतरंज के खेल की शब्दावली का भी बढ़िया प्रयोग हैं।

टिप्पणी

लखनऊ के नवाब और रईस जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते थे वही प्रयोग कहानीकार ने मिरज़ा साहब और मीर साहब के संवादों में किया है। इससे कहानी का स्वाभाविक विकास होता चला गया है। कई स्थानों पर व्यंग्यात्मक भाषा का भी इस्तेमाल किया गया है। जब हम किसी के दोषों पर चोट करते हैं तो भाषा में व्यंग्य आ जाता है। उदाहरण के लिए देखिए-खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह!

हमारी बोलचाल की भाषा की यह विशेषता होती है कि उसमें तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय और अनेक भाषाओं के शब्द चले आते हैं। उसमें हम मुहावरों, लोकोक्तियों और दो वस्तुओं की समानता बताने के लिए विभिन्न उपमाओं का भी प्रयोग करते हैं। इस कहानी में ये सभी बातें मिलती हैं, जैसे-

तत्सम शब्द- नृत्य, विचारशील, ऋण, व्यूह-रचना, मनोमालिन्य, वृत्तांत, आत्मा, योगी, समाधि, संग्राम-क्षेत्र, प्राणी, स्वाधीन, अहिंसा धूलि-धूसरित आदि।

तद्भव शब्द- गान, राजा, रात, सुहाग, रानी, घोड़ा, आँसू, चाल, आँख आदि।

क्षेत्रीय (देशज) शब्द- उबटन, चौसर, लौंडी, निखट्टू, कमली, निगोड़ी, चिलम, हुक्का, चरकटे आदि।

आगत शब्द- मौरूसी, जागीर, बिसात, मुलाहिजा, ज़लील, मैयत, वली, दस्तरख़ान, दीवानखाना, मनहूस, बेगम, हकीम, ख़ामख़ाह, नाजुक, मिजाज, खाक, मुहरा, मिन्नत, गुस्सेवर, रोज़, नौबत, तलब, मोर्चा, बेमौत, हज़रत, तदबीर, फ़ौज, आफत, रोज़ा, ऐशगाह, जालिम, नसीब, नवाब, खुदा, बादशाह, कयामत, खानदान, रियासत, बावर्ची, पेशकब्ज़, वज़ीर, मेहराब, आदि।

मुहावरे- इनके विषय में आप क्रियाकलापों में पढ़ चुके हैं।

लोकोक्ति- रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी।

19.2.6 उद्देश्य

आपने 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी पढ़ी। क्या आप जानते हैं कि इस कहानी को लिखने के पीछे प्रेमचंद का क्या उद्देश्य था? शतरंज खेल का एक प्रकार है। इस कहानी का नाम है शतरंज के खिलाड़ी। शतरंज के खेल में बहुत बुद्धि लगानी पड़ती है। जिस प्रकार युद्ध के मैदान में बचाव और आक्रमण का महत्व होता है, वैसे ही शतरंज के खेल में भी। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मिरज़ा और मीर जैसे लोग यदि अपना दिमाग देश के बचाव में लगाते तो गुलामी से बचा जा सकता था।

स्वाधीनता-आंदोलन के समय की अनेक रचनाओं में इतिहास से सबक लेने की बात कही जा रही थी। प्रेमचंद ने इस कहानी में भी स्वाधीनता-आंदोलन में लगे नेताओं और

टिप्पणी

उनके पीछे चलने वाली जनता को यह सीख दी कि देश और स्वाधीनता के हित में हमें आराम तथा विलास को छोड़ देना चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना चाहिए। लेकिन 'शतरंज के खिलाड़ी' के दोनों खिलाड़ी देश और समाज की उपेक्षा करके शतरंज में ही व्यस्त रहते हैं। वे अपनी बुरी आदतों के पक्ष में समाधान करते हुए कहते हैं कि शतरंज खेलने से बुद्धि तीक्ष्ण होती है। लेकिन उनकी तीक्ष्ण बुद्धि का कोई सामाजिक उपयोग कहानी में दिखा? नहीं न? स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का कोई भी पक्ष तब तक सकारात्मक नहीं बन पाता, जब तक कि उसका संबंध समूह के हित से न हो। इस कहानी में शतरंज, मीर और मिरज़ा- ये सब अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं बल्कि इनके माध्यम से कही गई बात महत्वपूर्ण है। वही प्रेमचंद का उद्देश्य भी है। प्रेमचंद देश को गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गुलाम बनाने वाली स्थितियों का चित्रण करके पाठकों को आगाह किया है। इसके साथ-साथ यह भी बताया है कि मानसिक प्रवृत्तियों का भी संक्रमण होता है, अर्थात् एक वर्ग की बुरी आदतें, दूसरे वर्ग तक पहुँचती है। कहानी में नवाब, मीर, मिरज़ा सब निष्क्रिय, विलासी और सुख-सुविधाओं में डूबे हैं। वे संघर्ष करने से बचते हैं। इन बातों का असर जनता पर भी पड़ता है। इसलिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से टूटा, व्यक्तिगत राग-रंग में डूबा है। इसका परिणाम यह होता है कि न तो देश बचता है, न ही व्यक्ति। नवाब बंदी हो गए और मीर और मिरज़ा व्यक्तिगत झूठी शान के कारण एक-दूसरे की हत्या कर देते हैं। बचते हैं– खण्डहर, टूटी दीवारें, धूल-धूसरित मीनारें ये सब मिलकर मिरज़ा और मीर पर रोते हैं।

पाठगत प्रश्न-19.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'मगर आपने उन्हें सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं है। इस वाक्य में प्रयुक्त मुहावरे का अर्थ है-

   (क) बहुत लाड़-प्यार से बिगाड़ देना। ☐

   (ख) सिर पर उठा लेना। ☐

   (ग) दिमाग खराब करना। ☐

   (घ) हाँ में हाँ मिलाना। ☐

2. 'निखट्टू' शब्द है–

   (क) तत्सम ☐ (ख) तद्भव ☐

   (ग) देशज ☐ (घ) आगत ☐

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' का उद्देश्य है–

   (क) शतरंज के खेल के प्रति विरक्ति प्रकट करना ☐

(ख) मीर और मिरज़ा के प्रति नाराजगी प्रकट करना ☐

(ग) गुलामी के कारणों के प्रति सचेत करना ☐

(ग) व्यक्तिगत स्वार्थों का चित्रण करना ☐

आपने क्या सीखा

- कहानी में नवाब वाजिद अली शाह के समय में लखनऊ के वातावरण के माध्यम से पतनशील सामंती प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है।
- प्रेमचंद ने यह कहानी लिखकर अपने समय की जनता और नेतृत्वशील वर्ग को आलस्य तथा विलास त्यागने तथा एकजुट होकर संघर्ष करने का संदेश दिया है।
- यह कहानी आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हमें किसी भी प्रकार की गुलामी से बचने का रास्ता दिखाती है।
- नवाबों की अकर्मण्यता के कारण लखनऊ अंग्रेज़ों के कब्जे में चला गया।
- प्रेमचंद की कहानियों में मुहावरों का भरपूर प्रयोग मिलता है।
- हिंदी भाषा के हिंदुस्तानी रूप का उपयोग किया गया है।

योग्यता-विस्तार

प्रेमचंद का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में सन् 1880 में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रारंभ में वे उर्दू में लिखते थे, लेकिन बाद में उन्होंने हिंदी को अपनाया।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में जो प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्रेमचंद को मिली, वह किसी और साहित्यकार को आज तक नहीं मिल पाई। इसका कारण प्रेमचंद के साहित्य के व्यापक सरोकार है। उनके समय में जितनी भी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ भी उन सब पर केन्द्रित साहित्य उन्होंने लिखा। प्रेमचंद की सहानुभूति देश के मामूली-से-मामूली आदमी के प्रति थी। उन्होंने किसानों, दलितों तथा स्त्रियों के पक्ष में साहित्य लिखा। उनके साहित्य को पढ़कर हम न केवल अपने देश की तत्कालीन परिस्थितियों का सच्चा चित्र बना सकते हैं, बल्कि अपने देश के लोगों के स्वभाव, रहन-सहन, भाषा और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास अपने समय की बात ही नहीं कहते, वे आज भी हमारे लिए पठनीय और प्रासंगिक हैं। ऐसी रचनाओं को ही कालजयी रचनाओं का दर्जा दिया जाता है। उनके साहित्य की इन्हीं विशेषताओं के कारण यदि उन्हें भारत का सांस्कृतिक राजदूत कहा जाए तो उचित ही होगा।

टिप्पणी

प्रेमचंद ने लगभग साढ़े तीन सौ कहानियाँ लिखीं हैं जो 'मानसरोवर' नाम से आठ खंडों में प्रकाशित हैं। उन्हें उपन्यास-सम्राट भी कहा जाता है। उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं- सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, गोदान।

उन्होंने अपना एक प्रेस खोला और एक मासिक पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने भारत में प्रगतिशील साहित्य के लेखन और प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1936 में उनकी मृत्यु हो गई।

पाठांत प्रश्न

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. मीर और मिरज़ा की मित्रता के सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।
3. 'जिसे आजीविका के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता, उसके जीवन में कुछ विकृतियाँ आ जाती हैं'– कहानी के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिए।
4. कहानी के उद्देश्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. भारत के स्वाधीनता-आंदोलन के संदर्भ में कहानी के महत्त्व पर विचार कीजिए।
6. कहानी में व्यक्त वातावरण की तुलना आज के वातावरण से करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।
7. मिरजा और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

19.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग)

19.2 1. (ख) 2. (घ) 3. (घ)

19.3 1. (क) 2. (ग) 3. (ग)